[redacted]

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015–17

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष : 74 अंक : 19
सृष्टि संवत 1960853118
6 अगस्त, 2017
दयानन्दाब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–74, अंक : 19, 3-6 अगस्त 2017 तदनुसार 22 श्रावण सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

मित्र पाप से बचाता है

–ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

मित्रो अंहोश्चिदादुरु क्षयाय गातुं वनते।
मित्रस्य हि प्रतूर्वतः सुमतिरस्ति विधतः।।

–ऋ० ५।६५।४

शब्दार्थ–मित्रः = सर्वस्नेही भगवान् **अंहोः+ चित्** = पाप से भी [बचाकर] **क्षयाय** = निवास के लिए **उरु** = विशाल **गातुम्** = पृथिवी **आ+वनते** = देता है, **हि** = क्योंकि **सुमतिः** = उत्तम बुद्धि उस **प्रतूर्वतः** = अतिशीघ्रकारी **विधतः** = विधाता **मित्रस्य** = कृपालु प्रभु की देन **अस्ति** = है।

व्याख्या–भगवान् के स्नेह को इतनी–सी बात से जान लेना चाहिए कि वह हमें सदा चिताता रहता है। वेद में बहुत ही सुन्दर कहा है–**'अचेतयदचितो देवो अर्यः'** (ऋ० ७।८६।७) = वह सर्वज्ञ स्वामी (मालिक) अचेतों को चिताता है। पापी को जब अपने पाप का और भगवान् के रक्षकत्व का बोध होता है और वह समझता है कि–**'मित्रो अंहोश्चिदादुरु क्षयाय गातुं वनते'** = स्नेहवान् भगवान् पाप से बचाता और निवास के लिए विशाल भूमि देता है, तब वह रो-रोकर कहता है–**'क्व त्यानि नौ सख्या बभूवुः सचावहे यदवृकं पुरा चित्'** (ऋ० ७।८८।५) = वे हमारी मैत्रियाँ क्या हुईं, जब पहले कुटिलतारहित हम मिलकर रहते थे। पाप करके हमने अपने चिरसंगी, सदा सङ्गी का सङ्ग छोड़ दिया और पाप-पङ्क में धँस गये। जीव तो अज्ञान के कारण पाप करने लगा, उसको पाप से ग्लानि स्वतः ही नहीं हुई, वरन् सर्वरक्षक परमात्मा ने ही उसे वह सुमति दी, जैसा कि वेद कहता है–**' 'मित्रस्य हि प्रतूर्वतः सुमतिरस्ति विधतः'** = क्योंकि सुमति तो अति शीघ्रकारी, कृपालु विधाता की देन है।

ऋषि ने लिखा है–''जब आत्मा मन और इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता, वा चोरी आदि बुरी वा परोपकार आदि अच्छी बात के करने का जिस क्षण में आरम्भ करता है उस समय जीव की इच्छा, ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाती हैं। उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शङ्का और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय, निःशङ्कता और आनन्दोत्साह उठता है, वह जीवात्मा की ओर से नहीं परमात्मा की ओर से है।''

सच्चे मित्र का यह कार्य ही है कि मित्र को सुमति=सच्ची मति दे। परमात्मा स्वाभाविक मित्र है–

''जैसा परमेश्वर सब जगत् का निश्चित मित्र है, न किसी का शत्रु और न किसी से उदासीन है, इससे भिन्न कोई भी इस प्रकार का कभी नहीं हो सकता।''

–स० प्र०, प्रथम समुल्लास

यदि भगवान् उदासीन हो जाए तो जीवों का–विशेषकर पापी जीवों का–निस्तार, उद्धार कभी न हो सके। परमात्मा का स्रोत ही पापियों की रक्षा कर रहा है। सांसारिक मित्र प्रयोजन न होने पर उदासीन या वैरी बन जाते हैं, किन्तु भगवान् तो सहज मित्र है, नैमित्तिक मित्र नहीं, अतः वह कभी उदासीन वा शत्रु नहीं होता।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

वैदिक भारत–कौशल भारत
आर्य महासम्मेलन 5 नवम्बर को नवांशहर में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन वैदिक भारत–कौशल भारत **5 नवम्बर 2017** रविवार को नवांशहर में करने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय–समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 5 नवम्बर 2017 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में नवांशहर में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें।

–प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

संध्या क्या ?, क्यों ?, कैसे ?

-ले. डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद

आज समाज की स्थापना से बहुत पूर्व जब से यह जगत् रचा गया है, तब से ही इस जगत् में संध्या करने की परम्परा अनवरत रूप से चल रही है। बीच में एक युग ऐसा आया जब वेद धर्म से विमुख होकर कार्यों का प्रचलन आरम्भ हुआ तो संध्या को भी लोग भुलाने लगे किन्तु स्वामी दयानंद सरस्वती जी का हम पर महान उपकार है, जो हम पुन: वेद धर्म के अनुगामी बने तथा संध्या से न केवल परिचित ही हुए अपितु संध्या करने भी लगे।

संध्या क्या है ?

सृष्टि क्रम में एक निर्धारित समय पर परम पिता परमात्मा का चिंतन करना ही संध्या कहलाता है। इससे स्पष्ट है कि दिन के एक निर्धारित काल में जब हम अपने प्रभु को याद करते हैं, उसका गुणगान करते हैं, उसके समीप बैठ कर उसका कुछ स्मरण करते हैं, बस इस का नाम ही संध्या है।

संध्या कब करें ?

ऊपर बताया गया है कि एक निश्चित समय पर प्रभु स्मरण करना ही संध्या है। यह निश्चित समय कौन सा है ? वह निश्चित समय कालक्रम से सृष्टि बनाते समय ही प्रभु ने निश्चित कर दिया था। यह समय है संधि काल। संधिकाल से अभिप्राय है जिस समय दिन व रात का मिलन होता है तथा जिस समय रात और दिन का मिलन होता है, उस समय को संधि काल कहते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि प्रात: के समय जब आकाश में हल्के-हल्के तारे दिखाई दे रहे हों, सूर्य निकलने की तैयारी में हो, इस समय को हम प्रात: कालीन संध्या काल कहते हैं। प्रात:काल का यह समय संध्या का समय माना गया है। इस समय ही संध्या का करना उपयोगी है।

ठीक इस प्रकार ही सायं के समय जब दिन और रात्रि का मिलन होने वाला होता है, सूर्य अस्ताचाल की ओर गमन कर रहा होता है किन्तु अभी तक आधा ही अस्त हुआ होता है। आकाश लालिमा से भर जाता है। इस समय को हम सायं कालीन संध्या समय के नाम से जानते हैं। सायं कालीन संध्या के लिए यह समय ही माना गया है। इस समय ही संध्या के आसन पर बैठ कर हमें संध्या करनी चाहिए।

गायत्री जप ही संध्या

वास्तव में गायत्री जप का ही दूसरा नाम संध्या है किन्तु इस गायत्री जप के लिए भी कुछ विधियां बनाई गई है, जिन्हें करने के पश्चात् ही गायत्री का यह जप आरम्भ किया जाता है। गायत्री जप के लिए भी कुछ लोग यह मानते हैं कि यह जप करते हुए कभी उठना, कभी बैठना तथा कभी एक पाँव पर खड़ा होना, इस प्रकार के आसन बदलते हुए गायत्री का जप करने को कहा गया है। हम यह सब ठीक नहीं मानते। हमारा मानना है कि गायत्री जप के लिए हम एक स्थिर आसन पर बैठ कर गायत्री मन्त्र का जाप करें। यह विधि ही ठीक है अन्य सब विधियां व्यवस्थित न हो कर ध्यान को भंग करने वाली ही हैं।

संध्या के प्रकार

कुछ लोग कहते हैं कि ब्राह्मण की संध्या भिन्न होती हैं जबकि ठाकुर लोग कुछ अलग प्रकार की संध्या करते है। इन लोगों ने ऋग्वेदियों की संध्या अलग बना ली है तो सामवेदियों की संध्या कुछ भिन्न ही बना ली है। यह सब विचारशून्य लोग ही कर सकते हैं। परमपिता परमात्मा सब के लिए एक ही उपदेश करता है, सब के लिए उसका आशीर्वाद भी एक ही प्रकार का है तो फिर संध्या अलग-अलग कैसे हो सकते है ? अत: संध्या के सब मन्त्र सब समुदायों, सब वर्गों तथा सब जातियों के लिए एक ही हैं।

जाप के पूर्व शुद्धि

ऊपर बताया गया है कि गायत्री जाप का नाम ही संध्या है किन्तु इस जाप से पूर्व शुद्धि का भी विधान दिया गया है। प्रभु उपदेश करते हैं कि हे जीव ! यदि तू मुझे मिलने के लिए संध्या के आसन पर आ रहा है तो यह ध्यान रख कि तू शुद्ध पवित्र होकर इस आसन पर बैठ। इस शुद्धि के लिए शरीर, इन्द्रियों, मन, बुद्धि, चित और अहंकार, यह छ: प्रकार की शुद्धि आवश्यक है। इस निमित आचमन से शरीर की शुद्धि, अंग स्पर्श से सब अंगों की शुद्धि, मार्जन से इन्द्रियों की शुद्धि, प्राणायाम से मन की शुद्धि, अघमर्पण से बुद्धि की शुद्धि, मनसा परिक्रमा से चित्त की शुद्धि तथा उपस्थान से अहंकार की शुद्धि की जानी चाहिए।

शुद्धि कैसे ?

अब प्रश्न उठता है कि यह शुद्धि कैसे की जावे ? इस के लिए बताया गया है कि हम प्रतिदिन दो काल स्नान करके अपने शरीर को शुद्ध करें। अपने अन्दर को शुद्ध करने के लिए राग, द्वेष, असत्य आदि दुरितों को त्याग दें। कुशा व हाथ से मार्जन करें। ओ३म् का उच्चारण करते हुए तीन बार लंबा श्वास लें तथा छोड़ें, यह प्राणायाम है। सबसे अंत में गायत्री का गायन करते हुए शिखा को बांधें।

इस प्रकार यह पांच क्रियाएं करके मन व आत्मा को शांत स्थिति में लाया जावे। यह शांत स्थिति बनाने के पश्चात् संध्या के लिए छ: अनुष्ठान किया जावें, जो इस प्रकार हैं :

संध्या के लिए छ: अनुष्ठान

१. शरीर को असत्य से दूर शरीर को असत्य से दूर करने के लिए संध्या में बताये गए प्रथम मन्त्र ओ३म् शन्नो देवी रभिष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयो रभिस्त्रवंतु न: का उच्चारण करने के पश्चात् तीन आचमन करें।

२. मार्जन पूर्वक इन्द्रियों की शुद्धि ओ३म् वाक् वाक् ओ३म् प्राण: प्राण: आदि मन्त्र से अंगों की शुद्धि करें। ओ३म् भू: पुनातु शिरसि आदि मन्त्र से प्रभु के नामों का अर्थ करते हुए मार्जन पूर्वक इन्द्रियों की शुद्धि करें।

३. प्राणायाम से मन शांत कम से कम तीन तथा अधिक से अधिक ग्यारह प्राणायाम कर अपने मन को शांत करें।

४. बुद्धि की शुद्धि तथा बोले मन्त्रों के अर्थ चिंतन ओ३म् ऋतं च आदि इन तीन मन्त्रों से अपनी बुद्धि को समझाते हुए शुद्ध करें तथा पुन: शन्नो देवी मन्त्र को बोलते हुए अब तक जो मन्त्र हमने बोले हैं, उन सब के अर्थ को देखें तथा अर्थों पर चिंतन करें।

५. चित्त को सुव्यवस्थित करें ओ३म् प्राची दिग अग्नि आदि इन छ: मन्त्रों का गायन करते हुए अहंकार तत्व से अपनी स्थिति का सम्पादन करें।

प्रधान जप यह छ: अनुष्ठान करने के पश्चात् हम इस स्थिति में आ जाते हैं कि अब हम प्रधान जप अर्थात् गायत्री का जप कर सकें। अत: अब हम गायत्री का जप करते हैं।

समर्पण

गायत्री का जब करते हुए हम स्वयं को उस पिता के पास पूरी तरह से समर्पित करने के लिए बोलते हैं, हे इश्वर दयानिधे भवत्कृपया जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थ काम मोक्षानाम सद्यसिद्धि र्भवेन्न। इस प्रकार हम समग्रता उस प्रभु को समर्पित हो जाते हैं।

नमस्कार

अंत में हम उस परमात्मा को नमस्ते करते हुए अपने आज के कर्तव्य को पूर्ण करते हुए संध्या का यह अनुष्ठान पूर्ण करते हैं। जाप की विधि गायत्री का जाप एक आसन पर बैठ कर ऊँचे उच्चारण से किया जावे।

ध्यान के समय मौन जाप की प्रथा है किन्तु अकेले में जाप करते समय ऊँचे स्वर से किया जाता है। कुछ लोग मौन जाप का कहते है तो कुछ उच्च स्वर में जबकि कुछ का मानना है कि यह जाप इतनी मद्धम स्वर में किया जावे कि मुख से निकला शब्द केवल अपने कान तक ही जावे। इस सम्बन्ध में स्वामी जी ने संस्कार विधि में मौन जाप का विधान ही दिया है।

हम संध्या करते समय यह सब ध्यान में रखते हुए ऊपर बताये अनुसार ही संध्या करें तो उपयोगी होगा।

सम्पादकीय......

आर्य समाजें वेद प्रचार सप्ताह मनाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि आर्य समाज के प्रचार-प्रसार को गति देने के लिए श्रावणी के दिनों में अपनी-अपनी आर्य समाजों में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन करें। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना इसी उद्देश्य के साथ की थी कि वैदिक संस्कृति की रक्षा हो, पवित्र एवं कल्याणकारी वेदवाणी का घर-घर में प्रचार हो। वेदों के महत्व को समझते हुए ही महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के तीसरे नियम में लिखा कि- वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। इसीलिए हमें चिन्तन करना है कि हम उस परम धर्म का पालन कर रहे हैं या नहीं। इसलिए श्रावणी का यह पर्व महर्षि के ऋण से उऋण होने का समय है। हमारे ऋषियों-मुनियों ने वैदिक संस्कृति को सुदृढ़ बनाने के लिए स्वाध्याय की महिमा पर बल दिया है और यह श्रावणी का समय स्वाध्याय के लिए उत्तम माना गया है। महर्षि याज्ञवल्क्य ने स्वाध्याय को परम श्रम, राजर्षि मनु ने परम-तप, महर्षि दयानन्द ने परम धर्म, महर्षि पतञ्जलि ने परम योग, उपनिषद के ऋषियों ने परम सकन्ध और परम दीक्षा, शतपथकार पररम यज्ञ तथा वेद परम रस कहते हैं। इसलिए सभी आर्य समाजें श्रावणी रक्षाबन्धन से लेकर श्री कृष्णजन्माष्टमी तक अपनी-अपनी आर्य समाजों में वेद प्रचार सप्ताहों का आयोजन करके लोगों को स्वाध्याय, सत्संग और वैदिक संस्कृति के साथ जोड़ने का प्रयास करें।

श्रावणी का पर्व हमें वेदाध्ययन के लिए प्रेरित करता है। अगर हम महर्षि दयानन्द के संदेश को घर-घर तक पहुंचाना चाहते हैं तो अपनी-अपनी समाजों में वेद प्रचार सप्ताह अवश्य मनाएं। वेद के विषय में महर्षि का जो मत है, जो विचार है उस विचार को जन-जन तक पहुंचाने के लिए हमें वेद प्रचार को बढ़ावा देना होगा। श्रावणी के पर्व पर हम वेद के स्वाध्याय का व्रत लें। वेद का अध्ययन हमें मानव बनाता है। महर्षि दयानन्द ने वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म बताया है। इस परम धर्म का पालन करने के लिए हमें श्रावणी पर्व पर व्रत ग्रहण करना है। हम घर-घर में वेद तथा महर्षि दयानन्द के संदेश को फैलाएं। आर्य समाजों का लक्ष्य वेद प्रचार होना चाहिए। सभी समाजें श्रावणी पर्व पर लोगों को स्वाध्याय करने के लिए प्रेरित करें। वैदिक साहित्य लोगों में बांटे और उसे पढ़ने के लिए प्रेरित करें। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा वेद प्रचार के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए कई वर्षो से वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर दिया जाता है। लोगों में जागृति लाने के लिए साहित्य का विशेष स्थान है। वैदिक साहित्य मनुष्य की बुद्धि को परिष्कृत करता है। मनुष्य के मन में उत्पन्न होने वाली सभी शंकाओं का समाधान वैदिक साहित्य के द्वारा ही सम्भव है। इसलिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वेदों के सैट, महर्षि दयानन्द की जीवनी, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कारविधि, योगेश्वर कृष्ण, स्वाध्याय सर्वस्व, स्वाध्याय संदोह, स्वाध्याय संदीप, वैदिक विनय तथा बच्चों के लिए बाल सत्यार्थ प्रकाश आधे मूल्य पर उपलब्ध कराती है। इसके पीछे सभा का उद्देश्य सिर्फ वैदिक विचारधारा का प्रचार-प्रसार करना है, वेद की वाणी को घर-घर तक पहुंचाना है, महर्षि दयानन्द के कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के उद्देश्य को पूरा करना है। सभी आर्य समाजें इन दिनों में एक-एक सप्ताह का वेद प्रचार सप्ताह अवश्य मनाएं, लोगों में वैदिक साहित्य बाँट कर स्वाध्याय के साथ जोड़े और लोगों को वेद के बारे में, महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के बारे में जागरूक करें।

श्रावणी पर्व के एक सप्ताह के बाद श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व आता है। योगीराज श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन हमारे लिए प्रेरणास्रोत है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश में श्रीकृष्ण के शुद्ध स्वरूप को वर्णन करते हुए लिखते हैं कि- देखो! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरूषों के सदृश है जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा और इस भागवत वाले ने अनुचित्त मनमाने दोष लगाएं हैं। दूध-दहीं, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जा दासी से समागम, परस्त्रियों से रासलीला, क्रीडा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण में लगाएं हैं। इसको पढ़-पढ़ा, सुन-सुना के अन्य मत वाले श्रीकृष्ण की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत वाले न होते तो श्रीकृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती। महर्षि दयानन्द की दृष्टि में श्रीकृष्ण योगी थे। परन्तु आज श्रीकृष्ण के स्वरूप को देखकर, लोगों के द्वारा उनका जन्मदिवस मनाने का ढंग देखकर सभ्य व्यक्ति का सिर शर्म से झुक जाता है। ऐसे योगीराज, महामानव, चरित्रनायक के जीवन के साथ वास्तव में अन्याय हुआ है। महापुरूषों के जीवन चरित्र में जितना अन्याय हिन्दु समाज ने श्रीकृष्ण के साथ किया है उतना अन्य किसी महापुरूष के साथ नहीं हुआ है। इसलिए जन्माष्टमी का पर्व मनाते हुए हम श्रीकृष्ण के शुद्ध और आप्त स्वरूप को जनता के समक्ष रखें।

श्रावणी के पर्व पर वेदों का स्वाध्याय करना, महापुरूषों को याद करके उनके जीवन से प्रेरणा लेना ऋषि तर्पण कहलाता है। ऋषियों के ऋण से उऋण होने के लिए हमें श्रावणी पर्व से स्वाध्याय का संकल्प लेना चाहिए और यह संकल्प वर्ष भर चलना चाहिए। जिस प्रकार शरीर के लिए अच्छे और पौष्टिक आहार की आवश्यकता होती है तथा शारीरिक उन्नति होती है, उसी प्रकार आत्मिक उन्नति करने के लिए स्वाध्याय करना आवश्यक है। स्वाध्याय से मनुष्य के अन्दर आध्यात्मिक वृद्धि होती है और वह आत्मिक उन्नति को प्राप्त होता है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों और शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि सभी आर्य बन्धु मिलकर इन दोनों पर्वो को बड़े उत्साह के साथ अपनी-अपनी समाजों और शिक्षण संस्थाओं में मनाएं। आम जनता तथा बच्चों को इन दोनों पर्वो का शुद्ध स्वरूप बताएं। आज श्रावणी का पर्व केवल रक्षाबन्धन तक सिमट कर रह गया है। लोगों को इस पर्व के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व के बारे में बताएं और सभी को वेद तथा वैदिक साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित करें। योगीराज श्रीकृष्ण के शुद्ध स्वरूप से जनता को अवगत कराएं। महापुरूषों के शुद्ध स्वरूप को बताना हमारा परम धर्म है। इसलिए आप सभी से विनम्र निवेदन है कि इस प्रकार का लक्ष्य लेकर हम सभी वेद प्रचार के कार्य में जुट जाएं और महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

भारत वर्ष की नींव गाय और गुरुकुलों पर टिकी है

-ले० पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

किसी भी व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व को तीन गुणों की सबसे अधिक अवश्यकता होती है। पहला बल, दूसरा बुद्धि और तीसरा चरित्र। गाय और गुरुकुल इन तीनों गुणों को बढ़ाने वाले होते हैं। इसीलिए प्राचीन भारत में गऊओं का पालन और गुरुकुल शिक्षा पद्धति ही अधिक चलती थी तभी भारत "विश्वगुरु" तथा "सोने की चिड़िया" कहलाता था। अंग्रेजों के आने से पहले तक भी गाय का पालन तथा गुरुकुलों की शिक्षा काफी मात्रा में थी। तभी अंग्रेजों ने समझ लिया था कि यदि हमको भारत पर शासन करना है तो गौ हत्या चालु करनी पड़ेगी और गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति समाप्त करनी पड़ेगी। इसीलिए उन्होंने गाय की हत्या के लिए हिन्दु-मुसलमानों में फूट डाली और गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को समाप्त करने के लिए ईंग्लिश स्कूलों का प्रचलन किया। गुरुकुलों के महत्व को हटाकर ईंग्लिश स्कूलों का महत्व बढ़ाया जिससे जन साधारण अपने बच्चों को गुरुकुलों में न भेजकर ईंग्लिश मिडियम स्कूलों में पढ़ाना आरम्भ कर दिया। इसी से गौ-हत्या आरम्भ हो गई और गुरुकुलों की संख्या कम होने लगी।

हमें अफसोस है कि भारत को स्वतन्त्र हुए सत्तर साल हो गये लेकिन कॉंग्रेस सरकार ने इन दोनों की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। अब देश का सौभाग्य उदय हुआ है, भारत का शासन B.J.P के हाथों में आ गया है और देश का प्रधान मन्त्री नरेन्द्र मोदी जैसा त्यागी, तपस्वी, ईमानदार व परिश्रमी व्यक्ति जो हिन्दुत्व की भावना से ओत-प्रोत है साथ ही पूज्य योगाचार्य स्वामी रामदेव जी महाराज जो गुरुकुलों में पढ़े हुए हैं और महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त हैं। वे मोदी जी के मार्ग दर्शक हैं। अब हमें पूरी उम्मीद है कि इन दोनों की तरफ सरकार पूरा ध्यान देगी और देश पुनः उन्नत व समृद्धशाली बनेगा।

अब प्रश्न उठता है कि गाय और गुरुकुलों से देश उन्नत और समृद्धिशाली कैसे बनेगा ? इसको हम ऊपर लिख चुके हैं कि देश को उन्नत और समृद्धिशाली बनाने के लिए तीन गुण बल, बुद्धि और चरित्र की आवश्यकता होती है। यह तीनों गुण गाय और गुरुकुलों में विद्यमान हैं। गाय केवल घास खाकर, उसके बदले में दूध, घी, दही, मक्खन व छाछ आदि पौष्टिक व उपयोगी चीज देती है। जिनके खाने से शरीर बलीष्ट तथा हृष्ट-पुष्ट के साथ-साथ सुन्दर व आकर्षक भी बनता है। गाय का दूध पीने से बुद्धि पवित्र व सात्विक बनती है साथ ही बुद्धि की वृद्धि होती है जिससे मनुष्य के विचार सात्विक होने से वह चरित्र वान भी बनता है। इसी प्रकार गुरुकुलों में विद्यार्थी संस्कृत और वेद पढ़ने से उसकी बुद्धि निर्मल व सात्विक बनती है। पच्चीस वर्ष तक पूर्ण ब्रह्मचारी रहने से विद्यार्थी बलिष्ट व चरित्रवान बनता है। बुद्धि पवित्र और सात्विक होने से उसमें मानवता के सभी गुण जैसे दया, करुणा, सहृदयता, परोपकारिता, निष्पक्षता, सच्चाई, ईमानदारी, साहस आदि गुण स्वमेव ही आ जाते हैं और वह एक पूर्ण मानव बन जाता है। इस प्रकार हम देखते है कि मानवीय गुण आने के गाय और गुरुकुल दो ही माध्यम है। इनके ऊपर हम और अधिक विशेष चर्चा करते है:

गाय: गाय मनुष्य की सर्वोत्तम सहयोगी है। मानव को पूर्ण मानव बनाने में गाय का सबसे अधिक योगदान होता है वैसे तो ईश्वर ने सृष्टि के आदि में प्रकृति की सब चीजें तैयार करके यानि पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा, तारे, नदी, नाले, पहाड़, वन, पशु पक्षी, कीट पतंग, सब मनुष्यों के लिए बनाये। इन सभी का मनुष्य किसी का प्रयोग, किसी का सहयोग, किसी का उपयोग करता है। जैसे गाय, भैंस, बकरी, दूध के लिए, घोड़ा, हाथी, ऊँट सवारी के लिए, सोना, चान्दी, लोहा, लकड़ी प्रयोग के लिए और अन्न, फल, वनस्पति आदि उपयोग लिए बनाये हैं। हमें इसी प्रकार प्रयोग, सहयोग व उपयोग करना चाहिए। इसी में मानव की मानवता है।

ईश्वर ने जीव की दो किस्म की योनियाँ बनाई हैं। एक भोग योनि और एक कर्म योनि। पशु-पक्षी, पीना, सोना-जागना उठना-बैठना तथा सन्तान पैदा करना आदि। इन कर्मो का जीव को कोई फल नहीं मिलता। परन्तु मनुष्य भोग योनि के साथ साथ कर्म योनि भी है। साधारण भोग जैसे पशु-पक्षी करते है वैसे ही मनुष्य भी भोग योनि होने से साधारण कर्म करता है उसका फल मनुष्य को भी नहीं मिलता। मनुष्य कर्म योनि भी है, इसलिए उसको, उसके किये अच्छे व शुभ कर्मों का फल सुख के रूप में और बुरे व अशुभ कर्मों का फल उसे दु:ख के रूप में ईश्वर अपनी न्याय-व्यवस्था के अनुसार देता है।

मनुष्य जो कर्म करता है, उन्हें नैमित्तिक कर्म कहते है। नैमित्तिक कर्म वह होते है जो सिखाने से सीखा जाये। माता-पिता बच्चे को चलना सिखाता है और बोलना सिखाता है तभी बच्चा चलना व बोलना सीखता है। पशु-पक्षी के बच्चे स्वयं ही चलना, बोलना सीख लेते हैं। उनके लिए यह कर्म स्वभाविक है और मनुष्य के लिए नैमित्तिक है। इसीलिए सृष्टि के आरम्भ में जब माता पिता व गुरु कोई नहीं थे तब परिवार ही सब का माता पिता व गुरु था इसलिए ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यों को क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए, इसको जानने के लिए चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य और अंङ्गिरा थे, उनके मुख से चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं क्रमशः उच्चारित करवाये जिनको पढ़कर और उनके अनुसार आचरण करके, अच्छे कर्मो को करे और बुरे कर्मो को छोड़ जिससे मनुष्य अपने अन्तिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति कर सके, जिसके लिए ईश्वर जीव को उसके कर्मों के अनुसार मनुष्य योनि में भेजता है। इसलिए मनुष्य का कर्तव्य हो जाता है कि वह मनुष्यता के गुण, परोपकार, दया, करुणा, सहृदयता, साहस, निष्पक्षता, मृदुभाषिता, अहिंसा आदि गुणों को अपनाये और अवगुण, काम, क्रोध, मद, लोभ मोह लालच, झूठ, बेईमानी, हिंसा आदि को छोड़कर अपना उत्तम व श्रेष्ठ जीवन बना कर मोक्ष प्राप्ति का अधिकारी बने; मनुष्य योनि ही कर्म योनि होने के कारण मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है, इसीलिए मनुष्य योनि को ही मोक्ष का द्वार माना गया है। अन्य योनियाँ भोग योनियाँ होने से वे केवल भोग, भोगकर ही अगली योनि में चली जाती हैं। फिर जीव सब भोगों को अनेक योनियों में भोग कर फिर मनुष्य योनि में आता है और अच्छे कर्मों द्वारा मोक्ष को प्राप्त होता है। सब अच्छे कर्मों को करना और सब बुरे कर्मों को छोड़ना हमें वेद जो ईश्वर की वाणी है, सिखाता है। इसके लिए वेद में एक मन्त्र आया है।

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव।।

अर्थ-हे सकल जगत् के उत्पत्ति कर्त्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर ! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दु:खों को दूर कीजिए और जो कल्याण कारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वह सब हमको प्राप्त कीजिए।

इन सब शुभ कर्मो का करना और अशुभ कर्मों को छोड़ना, विशेषत: हमें गौ पालन और गुरुकुल शिक्षा पद्धति ही सिखलाती है। गौ के दूध, घी, दही, मलाई, छाछ से हमारी बुद्धि पवित्र और सात्विक बनती है जिससे हम बुरे कर्मों को छोड़ते है और अच्छे कर्मों को करते हैं। इसी प्रकार गुरुकुलों में बच्चे पच्चीस वर्षों तक ब्रह्मचारी रहकर वेदों को पढ़कर

(शेष पृष्ठ 7 पर)

"स्तुता वरदा वेदमाता"

ले० अभिमन्यु कुमार खुल्लर 22, नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 (म. प्र.)

मंत्र में, [illegible] वेदमाता से माँगे गए हैं, [illegible] 'कीर्ति' और 'ब्रह्मवर्चस्व' का [illegible] अर्जित [illegible] होने से, अभी [illegible] [illegible] तो [illegible] [illegible] चाहता हूँ कि [illegible] [illegible] का प्रामाण्य [illegible] [illegible], स्वरचित उपासना [illegible] अन्य अनेक ग्रन्थों के [illegible] 'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रथम एवं सप्तम् समुल्लास को ठीक ठीक समझ कर हृदयंगम कर सकूँ, आत्मसात कर सकूँ।

मैं यह भी समझना चाहता हूँ कि महर्षि को ब्रह्मयज्ञ (संध्योपासना), देवयज्ञ (अग्निहोत्र), स्तुति, प्रार्थना और उपासना के मंत्रों का संयोजन कर एक उपासना पद्धति क्यों बनानी पड़ी? क्या उनके समय में इस हेतु कोई पूजा-पद्धति लिखित में उपलब्ध नहीं थी? इन प्रश्नों के विस्तार में जाने से पूर्व, स्मरण दिलाना चाहता हूँ कि 14 वर्ष की आयु से सही अर्थों में 21 वर्ष की आयु में गृहत्याग के पश्चात, 35 वर्ष की आयु अर्थात 14 वर्ष तक, रात-दिन 24 घण्टे, महर्षि का आश्रय स्थल मंदिर ही थे। मथुरा में गुरु विरजानंद जी से, शिक्षा प्राप्ति के समय भी आश्रय स्थल लक्ष्मी-नारायण मंदिर की एक कोठरी ही था।

महर्षि द्वारा मंदिरों में देखी गई पूजा किन शब्दावली में की जाती थी, इसका विवरण किसी भी जीवनी लेखक ने नहीं दिया है। मेरी दृष्टि में कोई प्रवचन, कोई लेख अभी तक नहीं आया है। अनुमान किया जा सकता है कि भीषण मानसिक यातना झेल चुके महर्षि ने स्वयं ही इस सबंध में कुछ नहीं कहा हो।

मंदिरों में, मूर्ति के रूप में उपस्थित ईश्वर से, उनकी उपासना विधि से यदि महर्षि दयानंद परितोष प्राप्त कर लेते तो उनकी ईश्वर की अवधारणा का संकल्प पूरा हो जाता। खोज को विराम मिल जाता। पर ऐसा हुआ नहीं। बोध रात्रि को ही निश्चय हो गया कि 'शिवलिंग' की मूर्ति 'शिव' नहीं है। पूजा पद्धतियों के गहन अवलोकन से यह भी पूर्णतया समझ में आ गया, विश्वास हो गया कि ये पूजा पद्धतियाँ ही ठीक नहीं हैं। [illegible] का शब्दार्थ 'पूजा का अर्थ' [illegible] [illegible] दुर्भावनावश नहीं करते थे, यह अब समझ में आया है।

'देव दयानंद शरणं गच्छामि' का प्रणयन करते समय यह विचार मानसिक क्षितिज पर कौंधा कि सनातनी (मूर्ति पूजक) भाई किन शब्दों में अपने आराध्यों की पूजा करते हैं, जानना होगा। मैं जन्मजात आर्यसमाजी संस्कार में पला बढ़ा, डी.ए.वी. में अध्ययन करने के कारण मुझे व्यक्तिगत रूप से, किंचित भी जानकारी नहीं थी। विवाह से पूर्व पत्नि श्रीमती स्वदेश मिक्सड बैक ग्राउण्ड (सनातनी + आर्यसमाजी) की थीं। वह सहज सुलभ भी हैं। सबसे पहिले उनसे ही पूछा। बताया-कुछ भी नहीं बोलते। प्रतिमा के समक्ष हाथ जोड़ते हैं, फूल-फल चढ़ाते हैं। प्रसाद भेंट करते हैं। पुजारी प्रसाद का टुकड़ा मूर्ति के चरणों में रख देते हैं। उस भेंट को भगवान (मूर्ति) द्वारा स्वीकार कर लिया गया, माना जाता है। शेष प्रसाद भक्त को मिल जाता है। वह उस प्रसाद को सिर-माथे पर लगा कर ग्रहण करता है। मूर्ति पर दान-दक्षिणा भी चढ़ातें हैं। गोपनीय रखनी हो तो दानपात्र में डाल देतें हैं। अभी यही हुआ। 500 व 1000 के नोटों का विमुद्रीकरण होने के बाद तिरूपति बालाजी, वैष्णों देवी, सांई मंदिर नासिक, में गुप्तदान में ये नोट बड़ी संख्या में डाले गए। झंझट खत्म हुई। कालाधन स्वीकार करने में इन तथाकथित भगवानों को कोई आपत्ति नहीं थी। कालाधन गवर्नमेन्ट को न सौंप कर भगवान को ही भेंट कर पुण्य कमाया। उधर पूछताछ, छापेमारी, जेल जाने का आसन्न भय था। पत्नि से चल रहीं वार्ता का क्रम पकड़ता हूँ।

मैंने पूछा-पूजा के नाम बस इतना ही। उत्तर हां में मिला। जिज्ञासा जाग्रत हो चुकी थी। अब तक दस-बारह पुरुषों, महिलाओं से यह प्रश्न पूछ चुका हूँ। एक ने तो विषय को गोपनीय बताकर कुछ भी कहने से मना कर दिया। पूजा पद्धति कोई बताने की चीज थोड़े ही होती है, मन की बात है। अन्य लोगों ने जो बताया सर्वांश में वहीं था जो पत्नी बता चुकी थी। अपवाद स्वरूप शिवभक्त परिचित व्यास जी ने बताया कि ओम नमःशिवाय का उलट पलट कर उच्चारण करते हैं शिवस्त्रोत पढ़ लेते हैं। शिवलिंग का अभिषेक प्रतिदिन तो जल से करते हैं लेकिन पर्वों पर दूध से करते हैं। मैंने पूछा ओम नमः शिवाय के अतिरिक्त और कुछ नहीं बोलते। उत्तर-न में था। मैंने व्यासजी से कहा आपके मंदिर में अन्य देवी देवता भी तो विराजते हैं। उनसे क्या कहते हो? उत्तर था जल छिड़कते हैं अगरबत्ती से सत्कार करते हैं और आरती के साथ सबकी पूजा हो जाती है। एक ब्राह्मण देवता ने कहा-मैं तो प्रतिदिन पूजा पाठ नहीं करता। मूर्ति दिखाने पर नमस्कार कर लेता हूँ। पर पत्नी प्रतिदिन करती है। आगे कहा-घर में मंदिर के समक्ष बैठक कर कभी हनुमान चालीसा और कभी सुन्दर काण्ड का पाठ-ऐसा ही कुछ करती रहती है।

शुक्ला जी की पत्नी द्वारा पूजा पद्धति और अन्य महानुभावों के समानान्तर उत्तरों ने मुझे चौंका दिया। 14 से 35 वर्ष की आयु तक महर्षि ने यही सब कुछ देखा-सुना। महर्षि के समय के पश्चात् स्थिति और बिगड़ती जा रही है। नए-नए भगवान अवतरित हो रहे हैं; तिरूपति बालाजी, वैष्णोदेवी, दोनों सांई बाबा। एक मुसलमान फकीर साँई बाबा बन गया, उसकी पूजा होने लगी। पूजा की पद्धति सबकी एक जैसी। पूजा का अवसर प्राप्त करने के लिये तिरूपति बालाजी, वैष्णोदेवी, दोनों साँई बाबा आदि अनेक मंदिरों में लम्बी-लम्बी कतारें लगती हैं। तिरूपति बालाजी में तो सामान्य दर्शन के लिये जिसमें भक्त हाथ जोड़ ही पाता है कि धकिया दिया जाता है, दिन के हिसाब में लोग पंक्तिबद्ध खड़े रहते हैं। शायद आपको पता हो, तिरूपति बालाजी विश्व का सबसे धनाढ्य मंदिर है। प्रतिदिन डेढ़ करोड़ रुपये मूल्य का चढ़ावा प्राप्त होता है।

इस पृष्ठ भूमि में, महर्षि दयानंद को ईश्वर का वैदिक स्वरूप निर्धारित कर, उसकी पूजा विधि निर्धारित करना अभीष्ट था, अनिवार्य था और अपरिहार्य भी। महर्षि ने वेदों में से केवल 8 आठ मंत्रों का चयन कर, पूजा पद्धति बनाई जिसका नामकरण किया, स्तुति, प्रार्थना और उपासना मंत्र:'

स्तुति यानि गुणगान, विरुद, गान या प्रशंसा। महर्षि स्तुति का अर्थ करते हैं 'यथार्थ वर्णन'। अर्थात् जो [illegible] वर्णन। महर्षि वेदसम्मत ईश्वर का [illegible] [illegible] इंगित भी नहीं करते कि [illegible] पौराणिक मूर्ति पूजकों व अन्य धर्मावलम्बियों का ईश्वर, ईश्वर के लिये अपरिहार्य मापदण्डों पर खरा उतरता ही नहीं है।

स्तुति में ईश्वर का स्वरूप निर्धारित करते हैं। पहिले ही मंत्र में ईश्वर को देव, सविता सम्बोधित कर दुरितानि दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःख के पराभव की प्रार्थना करते हैं। पूजा का अधिकारी बनने की प्रथम और सब [illegible] अनिवार्य सीढ़ी। देव [illegible], सुखदाता, कामना [illegible], सविता-सब जगत का उत्पादक, ऐश्वर्य दाता। देव व सविता के पश्चात् बताया कि वह ज्योति रूप (हिरण्यगर्भ:) है। वह ब्रह्माण्ड के नक्षत्र मण्डल में करोड़ों अरबों की संख्या में उपलब्ध तारे-सितारों का निर्माण करने वाला, धारण करने वाला, अर्थात् नक्षत्र मण्डल में सितारों की दूरी निश्चित कर अपनी धुरी (एक्सिस) व निश्चित परिधि में भ्रमण कराने वाला है। वही

(शेष पृष्ठ 7 पर)

हिमाचल के राजभवन में दो दिन

-ज्ञानेश्वरार्य वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ गुजरात

25 मई 2017 को हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल श्रीयुत आचार्य देवव्रत जी से मिलने के लिए शिमला के राजभवन में पहुँचा। यह राजभवान लगभग 175 वर्ष पूर्व तात्कालीन अंग्रेज ने अपने आवास के लिए बनाया था। इसमें दर्जनों कमरे हैं जो अत्याधुनिक, सभी सुविधाओं से युक्त हैं। इसमें 100 के लगभग सरकारी अधिकारी एवं कर्मचारी हैं, जो राजभवन में आने वाले अतिथियों राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपालों तथा अन्य विभिन्न विभागों के मंत्रियों अधिकारीयों के आवास, भोजन आदि सभी प्रकार की सुविधाओं का पूरा-पूरा प्रबन्ध करते हैं।

जैसा कि मैं पढ़ता व सुनता आया था कि राष्ट्रपति की तरह राज्यपाल भी एक सफेद हाथी की तरह या रबर स्टैम्प की तरह एक फालतू (अनावश्यक एम.एल.ए. मंत्रियों की) पदवी है जो मात्र हस्ताक्षर करने, प्रतिज्ञा दिलवाने, सभाओं में उपस्थित होने तक के ही काम होते हैं। अपनी और राजकार्यों में कोई प्रत्यक्ष हस्तक्षेप नहीं कर सकता है न कोई योजना/कानून विशेष बना सकता है। निष्क्रिय, अकर्मण्य व्यक्ति होता है जिस पर करोड़ों रुपये व्यय होते हैं। किन्तु दो दिनों में कुछ घण्टों की चर्चा, विचार विमर्श, प्रश्नोत्तर आदि के माध्यम से जो जो बातें सामने आयीं उनको सुनकर मैं तो स्तब्ध/आश्चर्य चकित हो गया। उनकी कुछ बातों को जन सामान्य के लिए प्रस्तुत कर रहा हूँ। जिन्हें पढ़ सुनकर वे हर्षित होंगे, उत्साह व प्रेरणा मिलेगी।

आचार्य देवव्रत जी ने राजभवन में आते ही राज्य के समस्त उच्चाधिकारियों से परिचय प्राप्त करने, उनके कार्य विभाग, उनके दायित्व, अधिकार, समस्याएं व प्रश्नोत्तर आदि से सम्बन्धित एक बैठक का आयोजन किया। इस बैठक से आचार्य जी को सहसा ही अधिकारियों की योग्यता, मानसिकता, भावनाओं से सम्बन्धित जानकारी मिल गयी। जैसा कि राजनीति में होता है, विरोधियों ने, विपक्षियों ने इस बैठक की प्रतिक्रिया में कपोल-कल्पित, मनगढ़न्त, मिथ्या धारणाएं बनाकर समाचार पत्रों में प्रकाशित कर दी। किन्तु बैठक में विद्यमान बुद्धिमानों, निष्पक्ष अधिकारियों तथा समाज के प्रतिष्ठित सज्जनों ने इन विरोधियों के विरोध में आवाज उठाई तथा आचार्य की प्रशंसा की और धन्यवाद भी प्रकट किया।

राजभवन में आते ही एक महत्त्वपूर्ण कार्य यह किया कि अंग्रेजों के काल से चली आ रही शराब, मांस, की पार्टी वाले भवन को उखाड़कर वहाँ पर एक सुन्दर, आकर्षक यज्ञशाला का निर्माण कराया उसके उद्घाटन के कार्यक्रम में भूतपूर्व तथा वर्तमान मुख्यमंत्रियों, विधानसभाओं के सदस्यों, मंत्रियों तथा अन्य समस्त राज्य के गणमान्य व्यक्तियों को आमंत्रित किया और उन्हें यजमान बनाया। वेदमंत्रों के शुद्ध पाठ द्वारा यज्ञ कराया तथा भजनोपदेशकों से भजन भी कराए। इसका राज्य की जनता पर इतना अद्भुत प्रभाव पड़ा कि आचार्य जी उनके लिए श्रद्धास्पद बन गये।

विरोधियों, स्वार्थियों, अज्ञानियों ने इसका भी विरोध किया कि राजभवन में यज्ञशाला बनाना अनुचित है, यह धर्मनिरपेक्षता के विरुद्ध है तो उनको उत्तर दिया गया कि जब राष्ट्रपति भवन में मस्जिद, गुरुद्वारा बन सकता है तो राजभवन में यज्ञशाला क्यों नहीं बन सकती इस तर्क से भी विरोधी निरुत्तर हो गये। आचार्य जी को जब भी खाली समय मिलता वे गाड़ी में फावड़ा, तसला, झाड़ू, बाल्टियां लेकर निकटस्थ गांवों के कर्मचारियों के साथ चले जाते और सफाई अभियान शुरु कर देते। गांव, नगर की जनता और वहाँ के राज्य कर्मचारी भी आकर राज्यपाल जी के साथ सफाई कार्य में लग जाते। इसका भी जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा वहाँ सर्वत्र उनकी स्तुति, प्रशंसा होने लगी, और आदर भाव भी होने लगा।

गुरुकुलीय शिक्षा से निर्मित, वैदिक विद्वान् निष्क्रिय, अकर्मण्य रहने वाले नहीं होते हैं वे कुछ न कुछ समाज, गांव, नगर, राज्य के लिए कार्य करते ही रहते है। आचार्य जी ने गाँवों का भ्रमण प्रारम्भ किया गाँव वालों से समस्या सुनी स्वयं भी अनुभव किया और अनुभव किया कि पर्याप्त वर्षा वाला प्रदेश होते हुए भी पानी सारा नीचे मैदानों में बह जाता है, गांव में खेती के लिए पानी नहीं बचता है, न पीने के लिए। अत: आपने गांव वालों को सुझाव दिया कि जहाँ पर गांव के आस पास नीची भूमि है और वहाँ पर पानी एकत्रित करने के लिए चक डेम बनाये जाये जिससे सिंचाई के लिए पानी मिलेगा, पानी का स्तर ऊपर होगा और पीने के लिए भी पानी उपलब्ध होगा।

गाँवों में भ्रमण करते हुए लोगों को घरों के आगे, पीछे फैक्ट्रियों के खाली स्थानों, पर्वतों पर वृक्ष लगाने की भी प्रेरणा देते हैं कम से कम एक वर्ष में एक व्यक्ति एक एक वृक्ष लगाये तो अनायास ही लाखों, करोड़ों वृक्ष लग जायेंगे। गांव के लोगों को पुत्री उत्पन्न होने पर घर में गीत गाने, समारोह मनाने तथा गांव भर में मण्डली बनाकर वाद्ययन्त्रों के साथ गीत भजन गाते हुए खुशी का प्रदर्शन करें। जिससे बेटियों के प्रति श्रद्धा, प्रेम बढ़ेगा। ऐसा सन्देश देते हैं। फैक्ट्री के स्वामियों को, दुकानों के मालिकों को फैक्ट्री के आस पास साफ सफाई रखने, कूड़ा कचरा हटाने, वहाँ पर कचरा पेटी रखने का भी संकेत करते हैं, उनको बताते हैं कि सफाई होने से सुन्दरता बढ़ेगी, रोग भी समाप्त होंगे, अन्यों को भी प्रेरणा मिलेगी।

राजभवन में यदा कदा देश भर के राज्यों के पदाधिकारी, राज्यपाल, मुख्यमंत्री आदि तथा राष्ट्रपति आदि भी अतिथि के रूप में आकर निवास करते हैं, और राजभवन में शराब, मांस, मछली आदि की मांग भोजन के रूप में करते हैं। मुझे सुखद आश्चर्य लगा कि सभी को यहाँ तक की राष्ट्रपति जी को भी मांस, मछली परोसने हेतु स्पष्ट मना कर दिया, बाहर से मंगवाकर खाने की प्रार्थना को भी कठोर शब्दों में निषेध कर दिया कि ऐसा बिल्कुल नहीं होगा, "मेरे लिए धर्म, संस्कृत की गरिमा बनाये रखना महत्त्वपूर्ण है, राज्यपाल का पद कोई महत्त्व नहीं रखता है।" यह एक साहस निर्भी-कता, आत्मबल का ही परिचायक है।

हिमाचल के राज्यपाल को देखकर देश के राज्यपालों के प्रति जो मेरी धारणा बनी हुई थी वह समाप्त हो गई कि ये "मिट्टी के माधो" होते हैं "Show Peace" होते हैं। किन्तु आचार्य जी तो किसी अन्य मिट्टी के बने हैं, उनके मन बुद्धि, विचारों का निर्माण करने वाले चाहे माता-पिता हों या आचार्यगण वे उच्च प्रकृति वाले आदर्श व्यक्ति थे। उनकी आत्मा ऋषियों के दिव्य सन्देशों, सिद्धान्तों, विधि-विधानों नियमों से रंगी हुई है। वे परिस्थितियों के दास बनकर, उनसे तुच्छ स्वार्थों के लिए समझौता करने वालों में से नहीं हैं। वे अज्ञानी, स्वार्थी, अभिमानी, अधर्मी, पापी व्यक्तियों के आगे झुकने वालों में से नहीं हैं। उनके लिए धर्म, सत्य, न्याय, आदर्श महत्त्वपूर्ण हैं धन, सत्ता, प्रतिष्ठा, सम्मान, तुच्छ है। ऐसे दिव्य गुणों, भावनाओं, संस्कारों, कर्मों से युक्त आचार्य पर हमें गर्व है। हम उनकी प्रगति और उन्नत भविष्य की कामना करते हैं। जिससे समाज राष्ट्र में वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार हो सके।

पृष्ठ 4 का शेष-भारत वर्ष की नींव...

अपने जीवन को पवित्र के साथ-साथ बलवान व पुष्ट भी बनाते है इसलिए इन दोनों की ओर मनुष्य को अधिक ध्यान देना चाहिए। गायों के सम्बन्ध में भी वेदों में मन्त्र आये हैं:

गावो विश्वस्य मातरः अर्थ-गाय विश्व की माता है।

गावो यत्र ततः सुखम : अर्थ-जहां गाय है वहीं सुख है।।

वेदों ने भी गाय को माता कहा है। माता तो बच्चे को केवल तीन या चार वर्ष ही दूध पिलाती है। परन्तु गाय तो उम्र भर मनुष्यों को दूध पिलाती है इसलिए गाय को माता मानना उचित है। साथ ही गाय मनुष्य पर अनेक उपकार करती हैं। वह अपने गोबर, गोमूत्र से उत्तम श्रेणी की खाद बनती है जिससे जमीन की उर्बरा शक्ति बढ़ती है। गाय के गोबर, गोमूत्र व दूध, घी, दही से अनेकों किस्म की दवाईयाँ बनती है जो मनुष्य के लिए बहुत लाभदायक हैं। यहाँ तक कि गो-मूत्र से तो कैन्सर तक की दवाईयाँ बनती है जो काफी लाभदायक सिद्ध हो रही है। गाय के बच्छड़े हल जोतते है और गाड़ी खींचते हैं। इस प्रकार गाय मनुष्य के लिए बड़ी लाभदायक है। भारत एक कृषि-प्रधान देश है और गाय का कृषि से विशेष सम्बन्ध है इसलिए गाय, भारत के लिए विशेष लाभदायक है। अत: भारत की उन्नति व समृद्धि के लिए गुरुकुलों को अधिक से अधिक खोलकर वेद प्रचार करना और गोशालाओं को अधिक से अधिक खोलकर गो-रक्षा करना आज की सबसे अधिक आवश्यकता है कारण इन्हीं दो कार्यों पर भारत की उन्नति व समृद्धि टिकी हुई हैं। इसलिए हमें इन दोनों कामों पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।

पृष्ठ 5 का शेष-स्तुता वरदा वेदमाता

परमात्मा समस्त प्राणी और अप्राणी जगत का उत्पत्तिकर्ता है। संपूर्ण ब्रह्माण्ड उससे ही परिव्याप्त है। दो पैर व चार पैर वाले जीव उसने ही बनाए हैं। वह सबका स्वामी प्रजापति है। वहीं मनुष्यों को आत्मज्ञान दाता, शारीरिक और सामाजिक बल देने वाला है। वही बन्धु-भ्राता के समान परम सहायक है। ऐसे ही परमेश्वर की छाया अमृत (मोक्षदायिनी) है अन्यथा जीव, जन्ममृत्यु के चक्र में चिरकाल फँसा रहेगा। अंतिम मंत्र में कहा गया है-प्रभु ! आप अग्नि हो-प्रकाश स्वरूप और सब जगत को प्रकाशित करने वाले। हमारे कुटिलता युक्त कर्मों एवं पाप कर्मों को दूर कीजिए।

प्रथम मंत्र में 'दुरितानि का पराभव' और अंतिम मंत्र में जुहुराण्म् एनः से छुड़ाने की प्रार्थना की गई है, यह संयोजन दृष्टव्य है। महर्षि का कमाल देखिए-स्तुति, प्रार्थना और उपासना के आठ मंत्रों के चयन में, इन तीनों पृथक प्रतीत होते हुए अवयवों का कैसा अपूर्व, अनूठा, अद्वितीय गुंफन कर एक सांगोपांग पूजा पद्धति दी है।

श्रावणी वैदिक यज्ञ एवं विचार गोष्ठी का आयोजन

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर में परम पूज्य स्वामी विशोकायन्ि की प्रेरणा से 13 अगस्त 2017 को श्रावणी वैदिक यज्ञ एवं विचार गोष्ठी तथा महिला शक्ति एवं आर्य समाज विषय के ऊपर श्रीमती हर्ष अरोड़ा जी की अध्यक्षता में तथा मुख्य अतिथि श्रीमती ज्योति शर्मा जी के नेतृत्व में सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इसअवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, उपप्रधान श्री सरदारी लाल जी, महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी, रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी, कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी विशेष अतिथि के रूप में शामिल होंगे। यह कार्यक्रम प्रातः 9:30 बजे हवन यज्ञ के साथ शुरू होगा तथा 1:30 बजे ऋषि लंगर के साथ इसका समापन होगा। आप सभी धर्मप्रेमी महानुभावों से प्रार्थना है कि इस कार्यक्रम में सपरिवार सहित पधार कर कार्यक्रम की शोभा को बढाएं।

-सुदेश आर्य वरिष्ठ उपप्रधान आर्य समाज भार्गव नगर

श्रावणी उपाकर्म (वेद सप्ताह)

आर्य समाज मुहल्ला गोविन्दगढ़ जालन्धर का श्रावणी उपाकर्म (वेद सप्ताह) 7 अगस्त से 13 अगस्त 2017 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री सुन्दर लाल जी शास्त्री के चतुर्वेद शतकम के पवित्र वेद मंत्रों पर व्याख्यान होंगे और श्री जगत वर्मा जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मधुर भजन होंगे। सभी धर्म प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि इस अवसर पर धर्म लाभ उठावें।

योग-ध्यान, साधना शिविर

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यस्वामी जी की अध्यक्षता एवं पूज्य मां सत्यप्रियायतिजी के सान्निध्य में दिनांक 10 से 17 सितम्बर-2017 तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें अनुभवी आचार्यो एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जाऐंगे तथा योगदर्शन एवं उपनिषद्-पठनपाठन की भी व्यवस्था है। शिविर में ऋषि उद्यान्, अजमेर से आचार्या सुकामाजी, वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी, स्वामी नित्यानन्द जी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। इस अवसर पर पूज्य स्वामी जी के ब्रह्मत्व में प्रतिवर्ष की भान्ति सामवेद पारायण-यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। आश्रम में पूज्यस्वामी जी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है अत: इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं. 09419107788, 09419796949 व 09419198451 पर रुतन्तर सम्पर्क करें।

-भारतभूषण आनन्द, आश्रम प्रधान

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17 RNI No. 26281/74

माता पिता की सेवा से होता है संतान का उद्धार

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में साप्ताहिक हवन यज्ञ में हिस्सा लेते हुये आर्य जन जबकि चित्र दो में साप्ताहिक यज्ञ में यजमान बने युगल दम्पत्ति श्री निशान्त कालिया व श्रीमती प्रीति कालिया को सम्मानित करते हुये आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य एवं सुभाष आर्य। चित्र तीन में प्रवचन सुनते हुये आर्यजन।

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में साप्ताहिक यज्ञ व भजन प्रवचन का आयोजन किया गया जिसके मुख्य यजमान निशान्त कालिया एवं श्रीमती प्रीति कालिया युगल नवदम्पत्ति व सुनयना शर्मा व रैना शर्मा ने श्रद्धा से यज्ञ में आहुतियां प्रदान की। वहीं यज्ञ के ब्रह्मा व मुख्य वक्ता आचार्य ज्ञान प्रकाश वैदिक ने कहा कि माता पिता की सेवा से बढ़ कर दुनिया में और कोई सेवा या पुण्य कर्म नहीं है। जिस सन्तान के उपर मां बाप का छाया है वह सन्तान भाग्यशाली है और वही व्यक्ति अपने जीवन में उन्नति के पथ पर आगे बढ़ता है जो अपने जीवित माता पिता का सेवा सम्मान तथा उनकी आवश्यकताओं को पूरा करता है। वह सन्तान सदा उन्नत और सुखी रहती है जो माता पिता की सेवा करता है। वहीं आर्य समाज मंदिर के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशिका श्रीमती सोनू भारती ने ईश्वर भक्ति का भजन हम सब मिल के आए दाता तेरे दरबार, भर दे झोली तेरे पूर्ण भंडार भजन सुना कर सब को मंत्र मुग्ध कर दिया। आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य ने आए हुये सभी आर्य जनों का धन्यवाद करते हुये कहा कि सन्तान वह होती है जो कहती है कि मैं माता-पिता के पास रहता हूं। इससे उसके संस्कार झलकते हैं। लेकिन आजकल की सन्तान तो यह कहती है कि माता पिता मेरे पास रहते हैं। इन दोनों ही स्थितियों में अंतर है। माता पिता के पास रहना यह उनकी सेवा और सम्मान की बात है और माता पिता हमारे पास रहते हैं यह उनकी मजबूरी है। यह बात केवल वेद और वैदिक सिद्धान्त ही बताते हैं इसलिये हमें माता पिता का सदा सेवा सम्मान करना चाहिये। कार्यक्रम में हर्ष लखनपाल, भूपेन्द्र उपाध्याय, अश्विनी डोगरा, सतपाल मल्होत्रा, केदार नाथ शर्मा, राजीव शर्मा, बलराज मिश्रा, रविन्द्र आर्य, राज कुमार सेठ, ईश्वर चन्द्र रामपाल, सुभाष आर्य, इन्दु आर्य, अनु आर्या, दिव्या आर्या, विजय कुमार चावला, संदीप अरोडा, चौधरी हरिचंद, बैजनाथ, रेणु शर्मा, वंश आर्य, सुदर्शन आर्य, कुबेर शर्मा, नन्दनी शर्मा, अशोक शर्मा, रेखा शर्मा, अमन आर्य, सृष्टि आर्य, प्रवीण शर्मा, मोहन लाल, मनु आर्य, शारदा रानी, स्वर्ण शर्मा, श्रीमती विजय लक्ष्मी शर्मा, सुनीता शर्मा, संदीप मल्होत्रा, निखिल लखनपाल, सुनील मल्होत्रा, संगीता मल्होत्रा, स्नेह लता कालिया, ललित मोहन कालिया, हिमांशु कालिया, सुभाष मेहता, ममता रानी, उमेश नारायण चौधरी, तिलक राज, उमा शुक्ला, तान्या आर्या, यशवी आर्य, सुरिन्द्र अरोडा, उर्मिल भगत, रानी अरोडा, अनिल मिश्रा, अर्चना मिश्रा व अन्य नगर निवासियों ने भाग लिया।

रणजीत आर्य
प्रधान आर्य समाज

नशा परिवारों को बर्बाद करता है

आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां में नशा मुक्त पंजाब कार्यक्रम में भाग लेते हुये सभा पदाधिकारी एवं अन्य आर्य जन।

पंजाब की धरती जिस पर पांच दरियाओं का पानी व्यक्ति को जीवन देता आया है, वहीं पर नशे के रूप में छठा दरिया पंजाब में मौत का तूफान लेकर आ गया। इस समय यह कैसे हुआ? क्यों हुआ? इस बहस में पड़ने का समय नहीं है क्योंकि अब तो पंजाब की 70 प्रतिशत जवानी चाहे वे लड़के हों या लड़कियां, इस नशे के जंजाल में फंस चुके हैं। अमीर परिवारों के बच्चे शौक से शुरू होकर इन नशे में इस तरह डूबे हुए हैं कि नशा पूरा करने के लिए वे कोई भी क्राईम करने को तैयार रहते हैं। पंजाब के कई गांव ऐसे हैं जहां कोई नौजवान लड़का ढूंढना हो तो नहीं मिलेगा। यह चिन्ता आज समाज का ज्वलन्त विषय बनी हुई है और सबके लिए चुनौती बनी हुई है। इस नशे से छुटकारा कैसे हो? यह खुद युवा पीढ़ी नहीं जान पा रही है। नशों के व्यापारी हर गली मोहल्ले तक पहुंच चुके हैं और आए दिन नए-नए बच्चों को इस जाल में फंसा रहे हैं। उनको अपने बच्चों के भविष्य की फिक्र तक नहीं कि नशे की कमाई से पल रहे बच्चों का भविष्य क्या होगा। यह आग अगर उनके घर में लगी तो शायद उनको पता चले, तब तक बहुत देर हो जाएगी। पंजाब सरकार नशे पर काबू पाने के लिए हर सम्भव प्रयास कर रही है तथा युवा पीढ़ी को मुख्यधारा के साथ जोड़ने का कार्य कर रही है।

समाज को नशे के प्रति जागरूक करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने एक कार्य योजना शुरू की है जिसके अन्तर्गत स्कूलों, कॉलेजों तथा आर्य समाजों में नशे के बारे में कार्यक्रम करके युवा पीढ़ी को जागरूक किया जा सके। इस सम्बन्ध में जालन्धर में दो कार्यक्रम आयोजित किए गए तथा आगे भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहेंगे।

सुदेश आर्य मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।